स्थापना : १९४६

फोन : 26589766

श्री बृहद् गुजरात संस्कृत परिषद्

शेठ श्री र. मो. भा. संस्कृत भवन, दिनेश होल नजदीक, गांधी पूल, अहमदाबाद-३८०००१.

प्रमुख :
मा. श्री एम. एस. परीख
नि. न्यायमूर्तिश्री, हाईकोर्ट, गुजरात

कुलपति :
मा. श्री परिमल नथवाणी
सांसदश्री

उपप्रमुख :
प्रा. डो. चन्द्रकान्त एच. महेता
श्री सुरेशचन्द्र एन. शेलत
श्री अरविन्दभाई जे. साहेबा

प्रधानमन्त्री :
प्रा. श्री सुरेशचन्द्र ज. दवे

सहमन्त्री :
श्री घनश्याम मा. त्रिवेदी
प्रि. श्री डी. पी. दीक्षित

कोषाध्यक्ष :
पं. श्री धनशङ्कर गौ. वैद्य

मीडिया रीलिज

श्री बृहद गुजरात संस्कृत परिषद का होगा जीर्णोद्धार

परीक्षा-शुल्क कम करने का फैसला

परिषद प्रमुख श्री एम. एस. परीख एवम् कुलपति श्री परिमल नथवाणी की उपस्थिति में कार्यकारिणी का निर्णय

मई 8, 2012 : पिछले 66 वर्षों मे अहमदाबाद में साबरमती नदी के तट से पूरे राज्य में देवभाषा संस्कृत भाषा के प्रचार, प्रसार एवम् शिक्षा के कार्य से जुड़ी श्री बृहद गुजरात संस्कृत परिषद का पुराना परिसर और कार्यालय भवन जल्द ही नई साज-सज्जा धारण करेगा । श्री बृहद गुजरात संस्कृत परिषद की कार्यकारिणी समिति ने 4 मई 2012 के रोज हुई अपनी बैठक में यह निर्णय किया । परिषद प्रमुख निवर्तमान न्यायमूर्ति श्री एम.एस. परीख और नवनियुक्त कुलपति श्री परिमल नथवाणी की विशेष उपस्थिति में यह बैठक सम्पन्न हुई जिसमें परिषद के कई पदाधिकारी एवम् कार्यकारिणी के सदस्य उपस्थित रहे ।

Website : www.shribruhadgujaratsanskritparishad.org E-Mail : info.b.g.s.parishad@gmail.com

परिषद के कुलपति श्री परिमल नथवाणी ने अपने प्रासंगिक उद्‌बोधन में बताया कि: 'मुझे भारतीय संस्कृति पर गर्व है और इसलिए संस्कृत भाषा की गरिमा, महत्ता और उपयोगिता के विषय में मैं सचेत हूं। द्वारकाधीश देवस्थान समिति, आदि शंकराचार्य द्वारा द्वारका में स्थापित शारदापीठ और नाथद्वारा टेम्पल बोर्ड जैसी संस्थाओं से घनिष्ठता से जुड़े हुए होने के नाते हमारी अपने प्राचीन गौरव-समान संस्कृत भाषा के प्रचार, प्रसार और शिक्षा कार्य को बृहद गुजरात संस्कृत परिषद के माध्यम से गति प्रदान करने के लिए मैं कृत-संकल्प हूं। श्री नथवाणी ने परिषद के आगामी कार्यक्रमों में सक्रियता से जुड़ने का निश्चय व्यक्त किया जिसका उपस्थित सभी सदस्यों ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाव दिया।'

बैठक के प्रारम्भ में परिषद के प्रधान मंत्री प्रा. सुरेशचन्द्र दवे और सहमंत्री श्री घनश्याम त्रिवेदी ने कुलपति एवम् परिषद प्रमुख का पुष्प-गुच्छ दे कर स्वागत किया। बैठक में उपस्थित वयोवृद्ध राजवैद्य एवम् संस्कृत मर्मज्ञ पं. धनशंकर गौरीशंकर वैद्‌य का भी परिषद की ओर से स्वागत किया गया। स्वागत-विधि के पश्चात परिषद की गतिविधियों का प्रतिवेदन एवम् वार्षिक लेखा स्वीकृत हुआ। वर्ष 2012-13 के बजट में परिषद की अनुमानित आय रु. 21.02 लाख और अनुमानित व्यय रु. 28.26 लाख के साथ रु. 7.24 लाख की प्रस्तावित कमी दर्शाई गई।

परिषद की कार्यकारिणी ने बैठक में प्रवर्तमान महंगाई को ध्यान में रखते हुए प्राचीन विभागीय परीक्षा शुल्क कम करने, प्रचारकों का पुरस्कार बढ़ाने, परीक्षकों के पारिश्रमिक में सुधार करने और पुस्तकों पर दी जाने वाली छूट में बढ़ोतरी करने का निर्णय किया।

बैठक में उपस्थित सदस्यों ने परिषद को आर्थिक एवम् अन्य तरीकों से सुद्रढ करने में अपनी अपनी ओर से योगदान देने की पेशकश हुई और तत्संबंधी मुद्दों पर विचार-विमर्श हुआ।

कुलपति महोदय ने जिस प्रकार अपने अतिशय व्यस्त कार्योंमें से परिषद के लिए समय निकालने और उसकी गतिविधियों में भाग लेने एवम् आर्थिक व अन्य तरीकों से योगदान देने की अपनी मंशा प्रकट की, इसके लिए परिषद की ओर से उनके प्रति विशेष आभार व्यक्त किया गया।

★ ★ ★